पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

विलेज प्रोफाइल

थैयाता

गाँव - थैयाता

पंचायत - कहारी

तहसील - दोवड़ा

जिला - डूंगरपुर, राजस्थान

पीस

गाँव का इतिहास

गाँव के इतिहास के बारे में बुजुर्ग ग्रामीण बताते है कि यह गाँव आजादी के समय से 100 वर्ष पूर्व का है । इस गाँव का नाम थाना नामक व्यक्ति के नाम से पड़ा है । यह अपने पूरे परिवार के साथ चित्तौड़ से मांडव आकर बसे थे । कुछ वर्षो बाद वह यहाँ इस गाँव में आकर बस गये थे, वो अपने साथ भेड़ माताजी लेकर आये थे जो अभी डोजा पंचायत के तलैया में स्थापित है । तब से उन्ही के परिवार के लोग आज भी गाँव में रह रहे है ।

कहारी ब गाँव का परिचय

थैयाता गाँव कहारी ग्राम पंचायत का एक राजस्व गाँव है । कहारी पंचायत में चार राजस्व गाँव है - कहारी अ, कहारी ब, थैयाता और डोलवर निचली । थैयाता गाँव जिला मुख्यालय डूंगरपुर से 20 किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में बसा हुआ है। गाँव में 3 फले है - थैयाता, रगोला और नयी बस्ती । थैयाता गाँव के सीमावर्ती गाँव वलोता, मारगिया, हिराता, डोजा, धरतीमाता और राजगढ़ी है ।

वर्ष 2009, जनवरी में गाँव में पेसा कानून के तहत शिलालेख हो गया और गाँव सभा का गठन कर दिया गया । गाँव के तय स्थान पर गाँव सभा की बैठके की जाती है और गाँव के मुद्दों पर गाँव सभा द्वारा फैसले लिए जाते है । थैयाता में करीब 90 घर है, जिनकी आबादी लगभग 480 है । थैयाता में केवल आदिवासी जाति के रोत, बरंडा और परमार उप-जातियो के लोग रहते है । इसके अलावा और कोई अन्य समाज या जाति के लोग नहीं है । यह गाँव पूरी तरह से आदिवासी जनजाति-बाहुल्य गाँव है । गाँव की पूरी जमीन का रकबा 207.76 हेक्ट. है जिसमें कृषि योग्य जमीन, चारागाह जमीन 80, बीघा और 24 बीघा बेनामी जमीन और जंगल की जमीन शामिल है । गाँव की कुल रकबा जमीन में ही पहाड़ भी शामिल है । गाँव की जमीन पथरीली, पहाड़ी ढलान और उबड़-खाबड़ है, जिस कारण अच्छी खेती, प्रर्याप्त आजीविका के साधन, अच्छी सड़क सुविधा की गाँव में ज्यादा गुंजाइश नहीं है ।

यातायात और आवागमन

गाँव तक जाने के लिए डूंगरपुर बस स्टैंड से रोडवेज बस की सहायता से बांसवाडा जाने वाले रोड पर डोजा मोड़ उतर कर गाँव तक जाया जा सकता है । यह सड़क गाँव के बीच में से होकर गुजरती है । गाँव में सड़क व्यवस्था काफी कमजोर है और सड़कों की कमी है । गाँव में सिर्फ 1 पक्की सड़क है जो अच्छी हालत में है । गाँव में सी. सी. सड़क 2 ही है और गाँव के भीतर जाने के लिए 1 कच्ची सड़क है, जो मेनरोड़ से रगोला तक जाती है । सी.सी. सड़के और कच्ची सड़क तेज बारिश के कारण कटकर बह गयी है । गाँव की जमीन ऊची-नीची और पहाड़ी है जिस कारण रोड़ बनाने में समस्या आती है । गाँव में 1 बस स्टैंड बना है । वहाँ पानी और शौचालय की व्यवस्था नहीं है । गाँव के मुख्य सड़क से ऑटो, जीप दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते है । गाँव के फलों में ग्रामीण अपने नीजी वाहन जैसे मोटर

साइकिल का उपयाग करते है या फिर पैदल जाया जाता है। क्योंकि गाँव के फलों के पगडण्ड़िया काफी सकरी है जिससे पहाड़ी पर रहने वालो को आने जाने में समस्या होती है ।

शिक्षा व स्वास्थय

गाँव में 2 प्राथमिक विद्यालय है, जिसमे 78 बच्चे और 4 अध्यापक नियुक्त है । 1 प्राथमिक विद्यालय रगोला में और 1 प्राथमिक विद्यालय थैयाता में है । दोनों विद्यालयों का भवन जर्जर हो गया है । अध्यापकों की कमी है । प्राथमिक स्कूलों की छत और फर्श टूट चुकी है, छत से प्लास्टर गिरता है जिससे बच्चों के साथ हादसा होने की आशंका बनी रहती है । कक्षा-कक्ष भी जर्जर हो गये है । स्कूलों में शौचालय की हालत बदतर है, सफाई के अभाव में बहुत गंदे हो गये है । पीने के पानी के लिए लगा हैंडपंप भी ख़राब है । पीने के पानी के लिए आर.ओ. नहीं लगा है । बहुत ही कम बच्चे 8वीं कक्षा के बाद आगे पढ़ते है, आगे की पढाई के लिए 5 किमी दूर आंतरी जाते है । पढने के लिए सीनियर और सीनियर सेकेंडरी स्कूल कहारी अ गाँव में है । स्नातक स्तर की शिक्षा के लिये डूंगरपुर शहर में आना पड़ता है, अधिकतर बच्चे डूंगरपुर में छात्रावास में या किराये पर कमरा लेकर रह रहे है ।

गाँव में साधारण बिमारियों के ईलाज के लिए उपस्वास्थ्य केन्द्र नहीं है । गाँव में किसी प्रकार की चिकित्सा सुविधा, दवाई की दुकान नहीं है । ईलाज के लिए 5 किमी दूर आंतरी पी.एच.सी. या 20 किमी दूर डूंगरपुर जाते है । मरीजों को अस्पताल ले जाने के लिए जिसके लिये टेम्पो या 108 की सुविधा भी नहीं है लेकिन मेन रोड़ तक मरीज को किसी तरह उठाकर लाना पड़ता है और यहाँ से निजी वाहन की मदद से हॉस्पिटल ले जाया जाता है ।

कृषि और रोजगार की स्थिति

गाँव में कुल 30 हेक्ट जमीन कृषि भूमि है । गाँव में सिंचाई के लिए पानी की भी बहुत कमी है । इस कारण गाँव की मुख्य फसल जैसे - मक्का, उडद, मूंग की खेती बारिश के मौसम में कर ली जाती है । अधिकतर खेती की जमीन उबड़-खाबड़ और पहाड़ी है । जमीन के पथरीली होने के कारण इतना उत्पादन नहीं होता है । बारिश के बाद गाँव में तेजी से जल स्तर नीचे चला जाता है अभी गाँव का भू जल-स्तर 200 से भी अधिक गहराई में है । इसलिए सिंचाई का पानी पूरा नहीं मिल पाता है । खेती से चार या पांच माह खाने भर का अनाज होता है उसके बाद सरकारी राशन की दुकान या बाजार से खरीदना पड़ता है। जिसके लिए राशन की दुकान 5 किमी दूर डोजा गाँव में है, गेहू के अलावा 2-3 महीने छोड़कर 2 लीटर केरोसिन दिया जाता है ।

घर चलाने के लिए आजीविका का साधन या रोजगार के नाम पर गाँव में खेती ही प्रमुख है और सरकारी योजना में मनरेगा में काम चलता है, साल के अधिकतम 60 दिन काम मिलता है और मजदूरी भी 90-100 रूपए ही दिये जाते है । अधिकतर लोग कड़िया मजदूरी करते है या डूंगरपुर शहर में आते है और गुजरात में अहमदाबाद, मोडासा, हिम्मतनगर जाते है, जहां वे खेतों में तथा फेक्ट्री में काम करते है।

सिंचाई की व्यवस्था एवं स्थिति

गाँव में पीने के पानी और सिंचाई के लिए प्रर्याप्त साधन नहीं है । गाँव के खेतों में पानी की व्यवस्था के लिए 15 चालू कुओं में अधिकतम 10 फीट पानी रहता है, गाँव में 1 नाला बहता है जो डोजा की ओर से आता है इसकी रिंगवाल नहीं है जिस कारण बारिश में तेज बहाव से मिटटी का कटाव होता है । नाले पर 2 एनिकट बने है एक का काम अधूरा है और दूसरा पुराना होने के कारण जर्जर हो गया है । गाँव में 2 तलावडी है । एनिकट और तलावडी में फरवरी तक पानी सूख जाता है । तलावडी में पानी का भराव छोटी होने के कारण कम ही होता है । सभी जल स्रोतों में मार्च आते आते पानी सूख जाता है या बंद हो जाता है । करीब 10 लोगो के पास खुद के कुओं की सुविधा है । मध्य ग्रीष्म ऋतु में पानी का जल स्तर 200 फीट नीचे चला जाता है और पानी की कमी हो जाती है ।

पशुपालन

गाँव में लोग गाय, बैल, बकरी, और भैंस पालते है जिनसे उनके दूध और खाने के लिए मांस की जरुरत पूरी हो जाती है । इसके अलावा ये बकरे को डूंगरपुर शहर के बाजार में लाकर बेचते भी है जिससे भी आय हो जाती है । गाँव की चारागाह की जमीन नहीं है जंगल की जमीन पर वन विभाग का कब्ज़ा है । खेती में पशुओं के लिए चारा पानी की कमी से इतना नही हो पाता है जिससे पूरे वर्ष जानवरों को चारा खिलाने का काम चल सके । अक्सर चारे के अभाव में पशु बहुत कमजोर हो जाते है । गाँव में किसी को भी पशुबाड़ा नहीं मिला है जिस कारण सर्दी की वजह से पशुओ का सर्दी से बचाव नहीं हो पाता है । मार्च के बाद चारे और भूसे का ट्रक खरीदना पड़ता है जो 15000 से 18000 रुपए कीमत में पड़ जाता है जिसे 4-5 लोग मिल कर खरीदते है ।

गाँव की चिन्हित समस्याओं का विवरण निम्न् प्रकार है-

प्राकृतिक संसाधन

थैयाता गाँव में जंगल की जमीन उत्तर दिशा की ओर है जंगल पर वन विभाग का कब्ज़ा है । जंगल में ज्यादातर बबूल के पेड़ है जो किसी काम नहीं आते है पहले सागवान, तेंदुपत्ता, ढ़ाक, टिम्बरु और आम के पेड़ बहुतायत थे । लेकिन वन विभाग के कब्जे में जाने के बाद और पानी की कमी के चलते जंगल खत्म हो गया है । अभी कुछ जमीन पर तेंदुपत्ता, टिम्बरु, ढ़ाक जैसी लघुवन-उपज होती है । तेंदुपत्ता संग्रहण के लिए वन विभाग टेंडर निकाल कर ठेके पर देता है । गाँव के कुछ पहाड़ो पर गाँव का कब्ज़ा है । पहाड़ो में किसी प्रकार के खनिज संसाधन की उपलब्धता की जानकारी नहीं है । गाँव के लोग पहाड़ो से घर बनाने के लिए मिटटी और पत्थर निकल कर ले जाते है । गाँव के लोगो के द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक वन दावा प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

आवागमन की समस्या

गाँव की जमीन ऊची-नीची और पहाड़ी है जिस कारण रोड़ बनाने में समस्या आती है । गाँव में मात्र 1 पक्की सड़क है यह भी गाँव की सीमा पर है गाँव के भीतर फलों में जाने के लिए 2 सी.सी. सड़के और 1 कच्ची सड़क है । गाँव के फलों में ग्रामीण अपने नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल का उपयाग करते है या फिर पैदल जाया जाता है। क्योंकि गाँव के फलों के पगडण्ड़िया काफी सकरी है । गाँव में 1 बस स्टैंड बना है लेकिन यात्रियों के लिए पीने के पानी और शौचालय की व्यवस्था नहीं है । गाँव के मुख्य सड़क से ऑटो, जीप दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते है । जिससे पहाड़ी पर रहने वालो को आने जाने में समस्या होती है । सवारी वाहन भी जब तक पूरे भर नहीं जाते तब तक नहीं चलते है जिससे लोग कहीं भी पहुँचने में लेट हो जाते है ।

भूमि व जल प्रबंधन की कमी

गाँव में ज्यादातर लोगों के पास अपनी कब्जे की जमीन के पट्टे नहीं है । सरकार की नीतियों के कारण लोगों को जमीन हाथ से जाने का भय है । खेत की जोत छोटी है और ज्यादातर खेत उबड़-खाबड़ है जिन्हें समतलीकरण की आवश्यकता है और असिंचित खेतों में नहरों की कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण उनमें केवल बारिश के पानी से ही फसल की पैदावार हो पाती है । गाँव में 1 बड़ा नाला है जिसकी रिंगवाल नहीं है और 15 चालू कुएं है जिसमे 10 फीट पानी ही रहता है जो पशुओ कों पिलाने में काम में लिया जाता है 2 एनिकट है लेकिन जर्जर और बेकार हालत में है । बाकि सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था या उपयुक्त साधन नहीं है । सभी जल जल-स्रोत मार्च तक सूख जाते है । गाँव में 6 चालू हैण्डपम्प है, सभी हैण्डपम्प का पानी फ्लोराइड से दूषित है। गर्मी में लोगो को 2 किमी की दूरी से पानी भर कर लाना पड़ता है । गर्मी में ना तो पीने को पानी मिल पाता है ना ही सिंचाई का पानी मिल पाता है।

पशुपालन संबंधित समस्या

गाँव में गाय, बैल, भैंस व बकरी पाली जाती है। गाँव में खेती की जमीन पर चारा होता है जो साल भर नहीं चल पाता है। खेती में सिंचाई के पानी की कमी के कारण खेतों में पशुओं के प्र्याप्त मात्रा में चारा भी नहीं उगाया जाता है। जो भी चारा बारिश के माह में होता है वह केवल चार या पांच माह ही चल पाता है उसके पश्चात खरिद कर लाना पडता है। चारे की एक पुली या गटठर सात रूपये में खरिदते है या फिर 4-5 परिवार वाले मिल कर 15000 से 18000 रूपये में भूसे का ट्रक खरीदते है । गाँव में दूध और कृषि के उपयोग में लेने के लिए उन्नत किस्म के पशु नहीं है । चारे के अभाव में दुधारू पशु भी ज्यादा दूध नहीं देते है केवल घरभर का काम निकल जाता है । अक्सर चारे के अभाव में पशुओ की मृत्यु भी हो जाती है । गाँव में किसी को भी पशुबाड़ा नहीं मिला है जिस कारण सर्दी की वजह से पशुओ का सर्दी से बचाव नहीं हो पाता है ।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर

गाँव में पढने वाले बच्चों के लिए केवल 2 प्राथमिक विद्यालय है और वों भी जर्जर हो गये है । दोनों विद्यालयों में 4 चार अध्यापक ही है । कमरे इतने पुराने हो गये है कि तेज़ बारिश में गिर जाये, स्कूल भवनों का रंग-रोगन उड़ गया है । विद्यालय में अध्यापकों की संख्या कम है । स्कूल की छत और फर्श टूट चुकी है, छत से प्लास्टर गिरता है जिससे बच्चों के साथ हादसा होने की आशंका बनी रहती है । बच्चों को जमीन पर ही बैठना पड़ता है क्योंकि दरी की व्यवस्था नहीं है । शौचालय की हालत जर्जर है, सफाई के अभाव में बहुत गंदे हो गये है । पीने के पानी के लिए लगा हैंडपंप का पानी फ्लोराइड युक्त है । इन सभी कारणों की वजह से बच्चों का नामांकन भी कम होता है वे पास के गाँव के स्कूल में जाते है । अध्यापकों की कमी के कारण बच्चों की शिक्षा भी प्रभावित हो रही है । बहुत कम बच्चे उच्च माध्यमिक स्तर तक पढ़ पाते है । स्नातक स्तर की शिक्षा के लिये डूंगरपुर शहर में आना पड़ता है, अधिकतर बच्चे डूंगरपुर में छात्रावास में या किराये पर कमरा लेकर रह रहे है ।

गाँव में 1 आंगनवाड़ी है जो नई बनी है, लेकिन दूर के छोटे बच्चे वहाँ नहीं जा पाते है । पोषाहार को लेकर भी लोगो को समस्या है वहाँ पोषाहार अच्छा नहीं दिया जाता है । गाँव में साधारण बिमारियों के ईलाज के लिए उपस्वास्थ्य केन्द्र नहीं है । ईलाज के लिए 5 किमी दूर आंतरी पी.एच.सी. या 20 किमी दूर डूंगरपुर जाते है । मरीजों को अस्पताल ले जाने के लिए जिसके लिये टेम्पो या 108 की सुविधा भी नहीं है लेकिन मेन रोड़ तक मरीज को किसी तरह उठाकर लाना पड़ता है और यहाँ से निजी वाहन की मदद से हॉस्पिटल ले जाया जाता है । लेकिन इसके लिए मरीज को मुख्य सड़क पर लाना बड़ा ही दुभर कार्य है क्योंकि सड़क खस्ता हाल है और पगडण्ड़िया सकरी है जिन पर चार-पहिया वाहन नहीं जा सकता है । बडा हॉस्पीटल 20 किमी दूर डूंगरपुर में है।

कृषि एवं खाद्यान्न की स्थिति

थैयाता गाँव की खेती की जमीन पथरीली और पहाड़ी है जिसमे अच्छी खेती और उत्पादन सम्भव नहीं है । गाँव में सिंचाई की भी अच्छी व्यवस्था नहीं है । गाँव में पानी की कमी के कारण फसल बारिश के मौसम में उगायी जाती है क्योंकि बारिश के बाद गर्मी के मौसम में सिंचाई के पानी की कमी हो जाती है। चूँकि गर्मी में जल स्तर नीचे चला जाता है और पानी की कमी हो जाती है । गाँव में भू-जल स्तर 200 फुट नीचे चला गया है। हालाँकि वहाँ पर 5 चेकडैम, 3 नाले, 5 तालाब, 21 कुऐ है, 15 चालू कुओं में 6-7 फीट पानी रहता है जिससे पशुओ के लिए ही पानी मिल पाता है । सभी जल स्रोतों में पानी साल के फरवरी-मार्च महीने में ख़त्म हो जाता है । गाँव के तालाब में मिटटी और कीचड़ से उथले हो गये है और इनसे लगातार पानी का रिसाव होता रहता है । ये भी सूखे ही रहते है । *खेती में ज्यादा कीटनाशकों का उपयोग, रासायनिक खादों का ज्यादा उपयोग, मिटटी की उर्वरकता की जाँच नही करवाना और मौसम के अनुसार खेती की उपज लेने की जानकारी ना होने से भी कृषि घाटे का सौदा साबित होता जा रहा है ।*

जितनी मेहनत और पैसा लग जाता है दाम और उत्पादन उसके मुकाबले कम है । वर्तमान में जो पानी को ना सहेजने की प्रवृति है वो बनी रही तो भविष्य में गाँव खाली करने या दूसरी जगह पर विस्थापित होने की स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है । गाँव में खेती से होने वाला अनाज केवल 4 या 6 माह ही चल पाता है, खेती से होने वाला अनाज पर्याप्त नहीं होने के कारण खरीद कर लाना पड़ता है। जिसके लिये सरकारी उचित मूल्य की दुकान डोजा गाँव में है । राशन की दुकान पर केवल गेहूं मिलता है, चीनी तथा केरोसीन त्यौहारों पर ही मिलता है। केरोसिन भी 2 लीटर ही दिया जाता है । कई बार राशन की दुकान पर दिया जाने वाला गेहू भी गुणवत्तापूर्ण नहीं होता है । राशन दुकान पर पॉस मशीन की भी समस्या रहती है। गाँव में जिन्हें उज्ज्वला गैस कनेक्शन मिल गया है उनका केरोसिन बंद हो गया है लेकिन इस योजना में गड़बड़ी है कि जिन्हें उज्ज्वला गैस कनेक्शन नहीं मिला है उनका भी बंद हो गया है । गाँव के लोगो की स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं है कि वे हर महीने सिलेन्डर खत्म होने पर उसे फिर से रिफिल करवा पाए ।

आजिविका एवं रोजगार के साधनों की कमी

गाँव में रोजगार का मुख्य साधन या तो खेती है खेती के अलावा मनरेगा में मजदूरी एक मात्र आजीविका चलाने का साधन है । रोजगार की स्थिति काफी खराब है, गाँव के अधिकतर युवा गुजरात राज्य के अहमदाबाद, हिम्मतनगर, सूरत, मोडासा या महानगर बम्बई में मजदूरी करने के लिये जाते है। गाँव में नरेगा पर काम मिलता है। जिसमें गाँव की महिलायें जाती है तथा जो पुरुष यहां रह कर खेती करते है वे भी नरेगा में काम पर जाते है। वर्तमान में मनरेगा में जो मजदूरी दी जा रही है वह भी 100 रूपये तक ही दी जाती है। मनरेगा में काम भी 50-60 दिन ही मिलता है । गाँव के पढ़े - लिखे युवा लोग काम करने के लिए शहरों में आते है । कुछ लोग अच्छी जीविका की तलाश और अच्छी सुविधाओं के लिए दूसरे जिलों में भी पलायन कर गये है ।

अन्य

गाँव में शमशान घाट खुले में है, लोग अपने परिजनों के दाह-संस्कार शमशान घाट पर बिना टिन-शेड की छाया और चबूतरे के करते है । वहाँ पानी, रोड की व्यवस्था भी नहीं है न ही कोई बैठक व्यवस्था है । गाँव में योजना के तहत बने शौचालय आधे-अधूरे है पानी की कमी के चलते उपयोग नहीं हो पा रहा है । गाँव में सिर्फ 30 घरों में बिजली है । जिन घरों में यह सुविधा उपलब्ध है उन्हें भी 6-8 घंटे ही बिजली मिल पाती है और बिजली विभाग के कर्मचारी बिना मीटर रीडिंग किये ही बिल दे देते है जो की अनुमान से भी कहीं गुना ज्यादा होता है । गाँव में 50 प्रतिशत परिवारों को उज्ज्वला गैस कनेक्शन मिल गया है । बाकी के कई लोगो ने सिर्फ इसलिए नहीं लिया है क्योंकि गैस लेने पर उनका केरोसिन भी बंद हो जायेगा और उनके चूल्हे जलने और रोशनी के लिए समस्या खड़ी हो जाएगी ।

गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं-

संसाधन	हालत	सम्भावना
जल नाला तलावड़ी एनिकट कुआं हैण्डपम्प	गाँव में 1 बरसाती नाला है जिस पर 2 एनिकट बने है जो जर्जर हो गये है । 2 तलावडी है । गाँव में 15 कुएं है जिनमे गर्मियों में सिंचाई के लिए पानी नहीं मिल पाता है केवल किसी तरह से पीने का काम चल जाता है । नाले की रिंगवाल नहीं है । जिससे मिटटी का कटाव भी होता है । गाँव में सिर्फ 6 चालू हैंडपंप है उनका पानी भी फ्लोराइड युक्त है। ऐसी स्थिति में मवेशीयों के पीने के पानी और सिंचाई की समस्या हो जाती है। सभी जल-स्रोतों में पानी मार्च माह तक ही रहता है । गर्मी में पीने का पानी दो किमी दूर से लाना पड़ता है ।	गाँव वासियों के अनुसार यदि नाले की रिंगवाल बना दी जाये तो पास के खेतों का कटाव नहीं होगा और तलावड़ी को गहरा करने से उसमे पानी ज्यादा रुक पायेगा । दोनों एनिकट की मरम्मत हो ताकि पूरे साल सिचाई की सुविधा मिल जाये है । नाले के रास्ते पर छोटे छोटे चेकडेम बनाये जाए तो गाँव में जमीनी पानी का तो जलस्तर ऊंचा होगा । फ्लोराइड मुक्त पानी के लिए आर.ओ. प्लांट लगना चाहिए ।
जमीन कृषि भूमि बिला नाम भूमि पहाड़ जंगल चारागाह	गाँव में जमीन समतल नहीं है, अधिकतर पहाडी, उबड़-खाबड़-पथरीली जमीन है। गाँव में बिलानाम जमीन और जंगल पर सरकार और वन विभाग का कब्ज़ा है । सारी जमीनें असिंचित है। जिसपर बरसात में होने वाली फसल ही पैदा होती है। पहाड़ मे किसी भी प्रकार के खनिज मिलने की कोई जानकारी नहीं है । जंगल में जाने और वन-उत्पादों के एकत्रण पर वन विभाग ने रोक लगा दी है । चारागाह जमीन पर बबूल के पेड़ उगे हुए है ।	गाँव की उबड़-खाबड़ जमीनों को अपना खेत अपना काम योजना के तहत समतलीकरण करके उसे उपजाऊ बनाया जा सकता है। जंगल पर अधिकारपत्र लेकर उसको साफ़ करके सागवान, इमारती लकड़ी वाले पेड़ उगाना, विकसित करना । गाँव की बेकार, खाली जमीन पर फलदार वृक्षारोपण भी किया जा सकता है। जिससे लोगों की आय के साधन बढ़ सकते हैं।
सड़क कच्ची सड़क सी.सी. सड़क पक्की सड़क	गाँव की जमीन ऊची-नीची और पहाड़ी है जिस कारण रोड़ बनाने में समस्या आती है । पक्की सड़क भी सिर्फ गाँव को जोडती है । सड़के टूट गयी है इनसे मिटटी और कंकड़ उड़ते है जिस कारण धूल उडती है । सबसे ज्यादा मुसीबत का	गाँव में पक्की सड़क की संख्या बढ़ाई जाये । यदि गाँव के कच्चे रास्ते सी.सी. सड़क में बदले जाये और नयी चौड़ी सी.सी. सड़के बनायी जाये तो गाँव के भीतरी इलाके में आवागमन में सुविधा होगी । बस स्टैंड को चालू किया जाये और

	सामना मरीजों कों हॉस्पिटल के लिए लाने ले जाने में और गर्भवती महिलाओं कों होती है । बारिश के मौसम में तो समस्या और भी गहरा जाती है ।	छोटी बस चलायी जाये ।
स्कूल	गाँव में 2स्कूल प्राथमिक है जिनकी छत से बारिश में पानी टपकता है और फर्श भी टूट रही है। खेल का मैदान नहीं है और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था नहीं है । स्कूल में अध्यापक भी कम है । दी जाने वाली शिक्षा की स्थिति काफी ख़राब दर्जे की है ।	प्राथमिक स्कूल में छत के ऊपर चाइना मोजिक करवाकर और प्लास्टर करवा कर अच्छा बनाया जा सकता है। फर्श, शौचालय की मरम्मत करवाना । अध्यापक नियुक्ति हो, सभी सुविधाए पूरी और अच्छी मिले, यह कार्य गाँव सभा के माध्यम से करना है ।
उज्ज्वला गैस कनेक्शन	गाँव में 50 प्रतिशत लोगो को उज्ज्वला गैस योजना का लाभ नहीं मिल पाया है । जिन्हें मिल गया उनका मिटटी का तेल बंद कर दिया गया है लेकिन साथ ही उन परिवारों का भी मिटटी का तेल बंद कर दिया गया है जिन्हें इस योजना का लाभ नहीं मिला है ।	योजना को सही से लागू किया जाये और मिटटी का तेल पुनः शुरू किया जाये ।

गाँव सभा द्वारा चिन्हित मुख्य समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं वरीयता

क्र. सं.	समस्याएं	सार्वजनिक/ व्यक्तिगत	कारण	समाधान	तात्कालिक/ दीर्घकालिक
1	**शिक्षा सम्बंधित समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में 2 प्राथमिक स्कूल है, जिसमे सिर्फ 4 अध्यापक नियुक्त है । स्कूल की छत से बारिश में पानी टपकता है और छत से प्लास्टर भी गिर रहा है साथ ही फर्श भी टूट रही है । स्कूल के शौचालय की स्थिति सही नहीं है । अध्यापकों की कमी है ।	गाँव के स्कूलों में सभी व्यवस्था पूरी दी जाये और अच्छी दी जाये । पूरे अध्यापकों की नियुक्ति हो । तभी बच्चों का नामांकन दर बढ़ेगी और ड्रापआउट दर कम होगी ।	**तात्कालिक**

2	**पेयजल की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में 15 चालू कुएं है जिनमे 10 फीट पानी रहता है जो गर्मी में सिर्फ मवेशियों को पिलाने के काम आता है और 6 चालू हैंडपंप है बाकि सभी जल-संसाधन सूखे है या पानी नहीं आता है, गाँव का जलस्तर 200 फिट से नीचे चला गया है। गर्मी में तालाब के सूख जाने से मवेशियों के लिए भी पानी की समस्या हो जाती है ।	जो हैंडपंप और कुएं बंद हो गये है या जिनमे पानी कम आने लगा है उन्हें गहरा करवाना और गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना ताकि फ्लोराइड मुक्त पेयजल मिल पाए । गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊंचा किया जा सकता है । जल-संरक्षण के प्रति लोगों की रूचि और जागरूकता बढ़ाना ।	**दीर्घकालिक**
3	**कृषि संबधी समस्या**	**व्यक्तिगत / सार्वजनिक**	गाँव की कृषि योग्य उपलब्ध भूमि उबड़ खाबड़ है। गर्मी में सिंचाई की सुविधा नहीं है। सिंचाई के लिए 1 बरसाती नाला है जिन पर बारिश का पानी गाँव में रोकने के लिए 2 एनिकट है, लेकिन जर्जर है । कुओं, एनिकट, नाले और तलावडी में पानी फरवरी के बाद समाप्त हो जाता है । पशुओ के पानी के लिए भी समस्या हो जाती है । सभी जल-स्रोतों में गर्मी के मौसम में पानी जल्दी ख़त्म हो जाता है ।	खेतों अपना खेत - अपना काम योजना के अंतर्गत समतलीकरण करवाना । बारिश के पानी को रोकने के लिए खेतों की मेड़ बंदी तथा कच्चे चेक डैम का निर्माण करना । घर और खेतों में टाके (पक्के खड्डे) बनवाना । एनिकट की मरम्मत करके उसकी ऊंचाई को बढ़ाना उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।	**तात्कालिक**
4	**रास्ते की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में पक्की और सी.सी. सडको की कमी है गाँव में सी.सी. और	गाँवसभा कमेटियों के गठन के बाद नये रास्ते निर्माण के प्रस्ताव लिए गए हैं और	**तात्कालिक**

			कच्ची सड़के तेज बारिश होने के कारण काफी ख़राब हो गयी है जिसके कारण हादसों की संभावना बनी रहती है । बीमार और गर्भवती महिलओं कों समय पर चिकित्सकिय मदद नहीं मिल पाती है ।	टूटे हुए रास्तों को फिर से ठीक करना और कच्ची सड़क को सी.सी. सड़क में बदलना ।	
5	**सरकारी योजनाओं की सहीं क्रियान्विति ना होना**	**व्यक्तिगत**	गाँव में किसी को भी पशुबाड़ा नहीं मिला है । गाँव में अभी भी कुछ परिवार वालों को आवास योजना का लाभ नहीं मिला है । कई लोगों लोगों का आवास योजना का पूरा भुगतान नहीं हुआ है। पेंशन में समस्या यह है कि गाँव में सरकारी कागजातों में उम्र अलग-अलग होने से भी लोगों की पेंशन भी बंद है। और समय पर जीवित प्रमाणपत्र ना प्रस्तुत करना भी एक कारण है ।	गाँव के सबसे जरूरतमंद लोगों को आवास निर्माण हेतु आवेदन कराना और उसके लिए प्रयास करना। बकाया राशि का भुगतान तुरंत करना। जिन लोगों को पेंशन नहीं मिल रही है उनको पेंशन योजना से जोड़ना। बंद पेंशन का भुगतान तुरंत शुरू करवाना।	**तात्कालिक**
6	**काबिज भूमि पर खातेदारी का हक नहीं मिलना और सामुदायिक दावा पत्र नहीं मिलना ।**	**सार्वजनिक**	लोग कई पीढ़ियों से गाँव में बसे हैं लेकिन जितनी भूमि पर वह काबिज है उसकी खातेरदारी का हक उनको नहीं मिला है। पिछले कुछ सालो से इसे सरकार के द्वारा बंद कर दिया गया है । जिसके कारण भविष्य में उनकी जमीन आसानी से छीन	गाँव सभा कों जिम्मेदारी लेकर लोगो के व्यक्तिगत जमीन के पट्टे फाइल जमा करना होगा । काबिज भूमि पर सामूहिक दावा करना। पट्टे की जमीन जिसकी पैनल्टी राजस्व विभाग ने लेना बंद कर दिया है उसे कोर्ट में जमा करना क्योंकि पेनल्टी नहीं देने से पट्टा	**दीर्घकालिक**

			जाने का संकट खड़ा हो गया है।	खारिज हो जाएगा और धारा 91 के अनुसार काबीज जमीन का नियमन कराना। गाँव सभा द्वारा सबकी फाइल तैयार करके एक साथ राजस्व विभाग में दावे का मुकदमा करना।	

संसाधन आंकलन व SWOT विश्लेषण

S- Strengths शक्तियां	W- Weakness कमजोरी	O- Opportunities अवसर	T- Threats चुनौतियां
आवागमन - कच्चे रास्ते, सी.सी. सड़क, पक्की सड़कें	टूटी हुई पक्की सड़क और सी.सी. सड़क को सही नहीं करवाना। कच्चे रास्ते को सी.सी. में नहीं बदलवाना । गाँव में बस की मांग नहीं करना । कठिन रास्तों और पहाड़ी होने के कारण सरकार भी बस सुविधा नहीं देती है।	रास्ते ठीक होने से गाँव में साधन आ जा सकते हैं लोगों को आने जाने में समय की बचत होगी। रोड़ लाइट लगने से दुर्घटनाओ की संभावना कम हो जायेगी । बीमारी की हालत में मरीज को जल्दी चिकित्सा सुविधा मिल सकती है ।	इस समस्या को लेकर अधिक से अधिक लोगो का गाँव सभा में नहीं आना, साथ ही वे इसको सरकार पर छोड़ रहे है ।
जल-स्रोत	गाँव में सभी नाले, तलावडी, एनिकट और कुएं भू-जल स्तर के 200 फीट से भी नीचे जाने के कारण गर्मी आने से पहले ही सूख जाते है । वर्षा जल-संरक्षण का कोई ठोस कदम गाँव और पंचायत की ओर से नहीं उठाया गया है । गर्मी में पानी सूख जाने से संकट हो जाता है ।	एनिकट मरम्मत और कच्चे और पक्के चेकडेम निर्माण, घरों में पक्की टंकी का निर्माण करवाना । बरसात के पानी को योजनाबद्ध तरीके से रोका जाए जिससे भू जल स्तर को भी ऊँचा किया जाता हैं और सिचाई के पानी के संकट को दूर किया जा सकता है ज्यादा और तेज पानी के बहाव वाले स्थान पर	पंचायत द्वारा इस चुनौती से निपटने के लिए कोई पहल नहीं करना और योजना होते हुए भी ना क्रियान्वित करना । गाँव के लोगों की उदासीनता । गाँव सभा में इसके लिए प्रस्ताव लेना ।

		नया एनिकट निर्माण करना ।	
आजीविका के साधन	गाँव में खेती और मनरेगा के अलावा और किसी रोजगार के साधन का अभाव । कृषि उत्पादन की कमी। अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का अभाव।	गाँव में खाली पड़ी जमीन और पहाड़ियों पर वृक्षारोपण, अच्छी नस्ल के पशुओं का सरकार के द्वारा उपलब्ध करवाना । लघुगृह उद्योग, सब्जी की खेती से आय के स्रोत बढ़ाये जा सकते हैं।	गाँव के लोगों के पास पर्याप्त खेती कीजमीन का अभाव। उन्नतशील बीज और बेहतर किस्म के पशुओ का अभाव। जमीन और पहाड़ों के बेहतर प्रबंधन की कमी।
भूमि	सभी लोगों के पास कब्जे की जमीन के पट्टे ना होना । खेती की पर्याप्त जमीन नहीं होना।	खेती की जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना। गाँव की सार्वजनिक खाली पड़ी जमीन पर फलदार वृक्षारोपण करवाना।	सभी लोगों के पास पर्याप्त जमीन का अभाव। सिंचाई का अभाव खाली पड़ी जमीन के बेहतर उपयोग की योजना का अभाव।
उज्ज्वला गैस कनेक्शन	गाँव में 50 प्रतिशत लोगो को उज्ज्वला गैस योजना का लाभ नहीं मिल पाया है । जिन्हें मिल गया उनका मिटटी का तेल बंद कर दिया गया है लेकिन साथ ही उन परिवारों का भी मिटटी का तेल बंद कर दिया गया है जिन्हें इस योजना का लाभ नहीं मिला है ।	योजना को सही से लागू किया जाये और मिटटी का तेल पुनः शुरू किया जाये ।	लोगो को भय है कि गैस कनेक्शन लेने से उनका भी केरोसिन अन्य लोगो की तरह बंद हो जायेगा और रात अँधेरे में गुजारनी पड़ जाएगी । दूसरी तरफ जिन्हें गैस मिल गयी है उनकी भी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है कि वे दुबारा सिलेन्डर रिफिल करवा पाए ।

- **गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव का नजरिया नक्शा-**

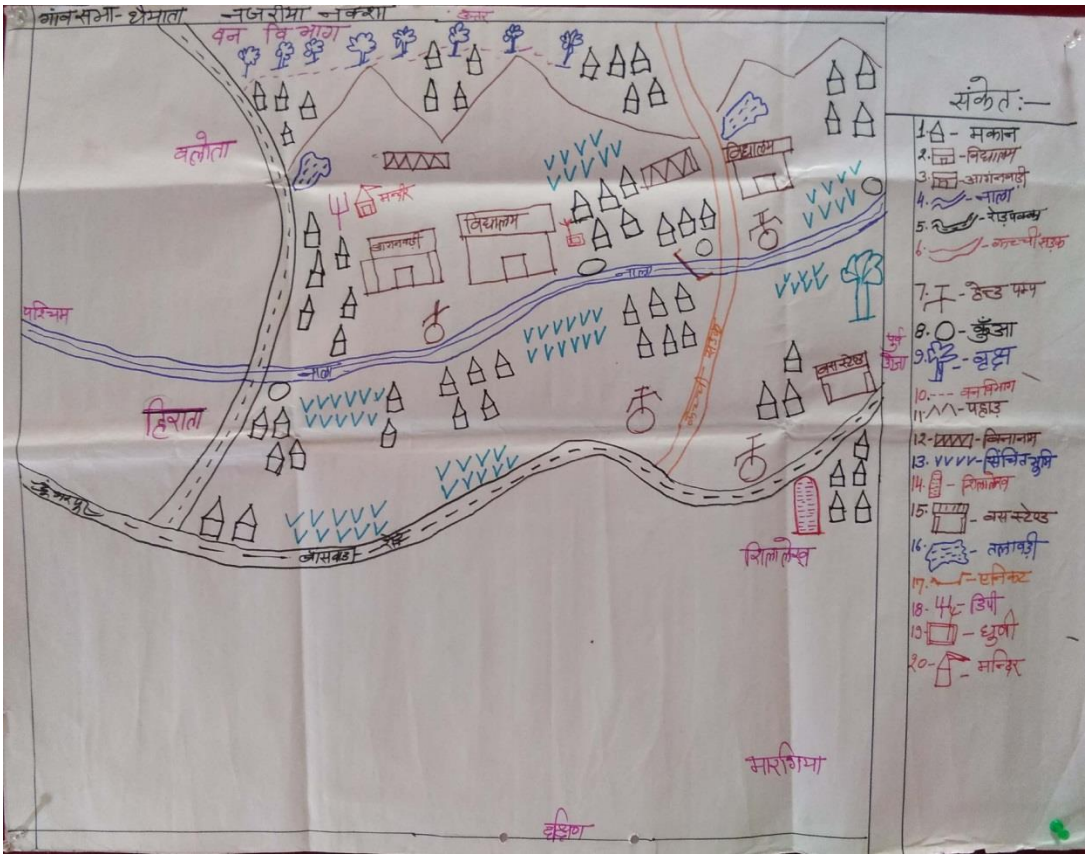

- **गाँवसभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यो का विवरण -**

प्रस्तावित कार्य	संख्या
पेंशन के सम्बन्ध में	
वृद्धा पेंशन	15
एकलनारी पेंशन	3
विकलांग पेंशन	1
पालनहार (0-5 वर्ष) (6-18 वर्ष)	3+4=7
पी.एम., सी.एम. आवास योजना	27
शौचालय निर्माण व बकाया राशि भुगतान	4
स्कूल के सम्बंध में 3 अध्यापकों की नियुक्ति 3 कमरों का निर्माण शुद्ध पीने के पानी की व्यवस्था	रा.प्रा.वि. थैयाता
आंगनवाड़ी सुचारू चलने के सम्बन्ध में	1

सामुदायिक भवन निर्माण के संबंध में	1
राशन की दुकान खोलने के सम्बन्ध में	1
रास्ता निर्माण के सम्बन्ध में सी.सी. सड़क कच्ची सड़क	 10 2
तालाब गहरीकरण और रिन्ग्वाल	थैयाता तालाब
चेकडैम और एनिकट निर्माण व मरम्मत के सम्बन्ध में	9 चेकडैम 1 एनिकट मरम्मत
हैंडपंप के सम्बन्ध में नया हैंडपंप पुराना हैंडपंप मरम्मत	 10 3
शमशान घाट निर्माण के सम्बन्ध में	1
काबिज भूमि पर दावा लगाने के सम्बन्ध में	
वन भूमि पर सामुदायिक दावा फाइल लगाने के सम्बन्ध में	
आपसी विवाद निपटारा के सम्बन्ध में	
सामाजिक कुरीतियों पर रोक के सम्बन्ध में	

गाँव विकास नियोजन प्रक्रिया -

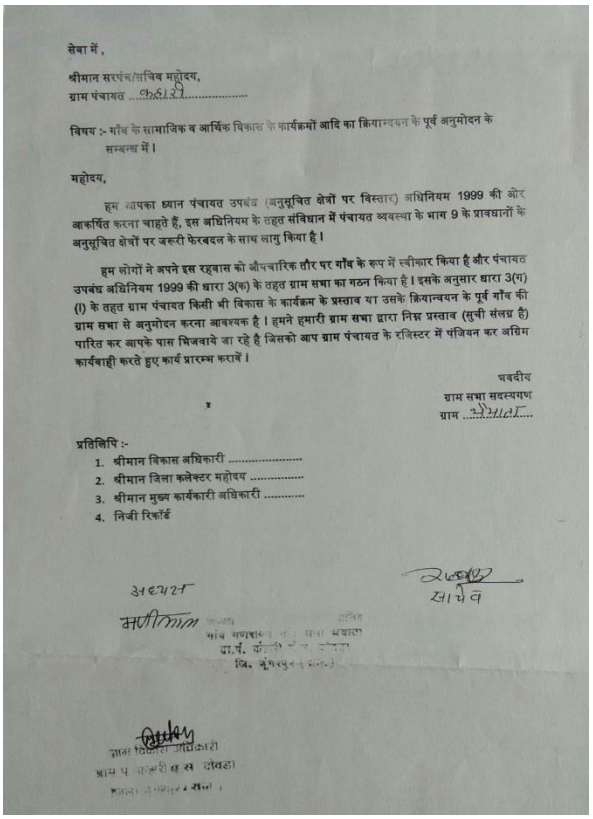

सेवा में,

श्रीमान सरपंच/सचिव महोदय,
ग्राम पंचायत .....

विषय :- गाँव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कार्यक्रमों आदि का क्रियान्वयन के पूर्व अनुमोदन के सम्बन्ध में।

महोदय,

हम आपका ध्यान पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम 1999 की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, इस अधिनियम के तहत संविधान में पंचायत व्यवस्था के भाग 9 के प्रावधानों के अनुसूचित क्षेत्रों पर जरूरी फेरबदल के साथ लागु किया है।

हम लोगों ने अपने इस रहवास को औपचारिक तौर पर गाँव के रूप में स्वीकार किया है और पंचायत उपबंध अधिनियम 1999 की धारा 3(क) के तहत ग्राम सभा का गठन किया है। इसके अनुसार धारा 3(ग) (I) के तहत ग्राम पंचायत किसी भी विकास के कार्यक्रम के प्रस्ताव या उसके क्रियान्वयन के पूर्व गाँव की ग्राम सभा से अनुमोदन करना आवश्यक है। हमने हमारी ग्राम सभा द्वारा निम्न प्रस्ताव (सुची संलग्न है) पारित कर आपके पास भिजवाये जा रहे है जिसको आप ग्राम पंचायत के रजिस्टर में पंजियन कर अग्रिम कार्यवाही करते हुए कार्य प्रारम्भ करावें।

भवदीय
ग्राम सभा सदस्यगण
ग्राम .....

प्रतिलिपि :-
1. श्रीमान विकास अधिकारी .....
2. श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय .....
3. श्रीमान मुख्य कार्यकारी अधिकारी .....
4. निजी रिकॉर्ड

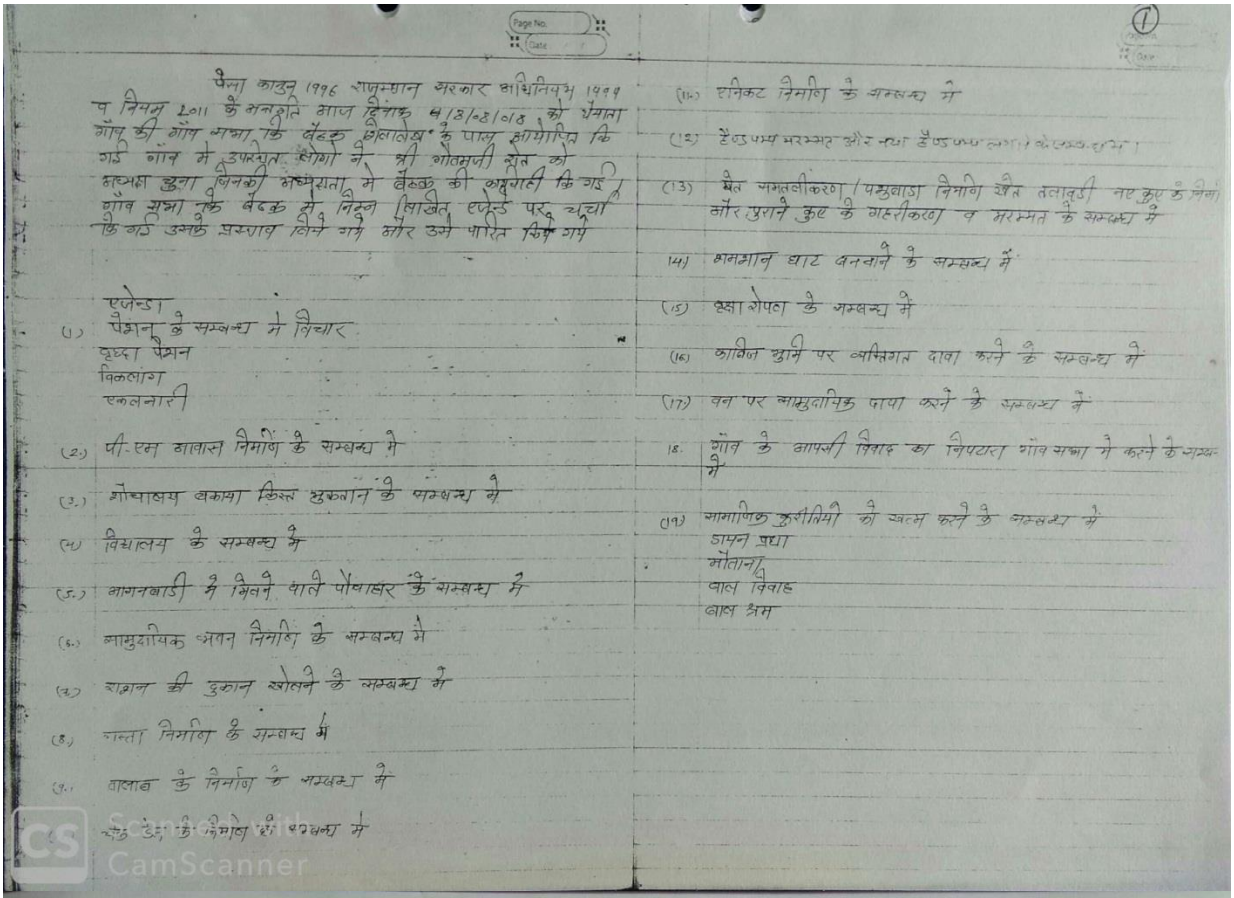

पैसा कानून 1996 राजस्थान सरकार अधिनियम 1999 व नियम 2011 के अन्तर्गत आज दिनांक 4/8/08/018 को धैयाता गाँव की गाँव सभा कि बैठक शिलालेख के पास आयोजित कि गई गाँव मे उपस्थित लोगो ने श्री गौतमजी रोत को अध्यक्ष चुना जिनकी अध्यक्षता मे बैठक की कार्यवाही कि गई। गाँव सभा कि बैठक मे निम्न लिखित एजेन्डे पर चर्चा कि गई उसके प्रस्ताव लिये गये और उसे पारित किये गये

एजेन्डा।

(1.) पेंशन के सम्बन्ध मे विचार
वृद्धा पेंशन
विकलांग
एकलनारी

(2.) पी.एम आवास निर्माण के सम्बन्ध मे

(3.) शौचालय बकाया किस्त भुकतान के सम्बन्ध मे

(4.) विद्यालय के सम्बन्ध मे

(5.) आगनबाडी मे मिलने वाले पोषाहार के सम्बन्ध मे

(6.) सामुदायिक भवन निर्माण के सम्बन्ध मे

(7.) राशन की दुकान खोलने के सम्बन्ध मे

(8.) रास्ता निर्माण के सम्बन्ध मे

(9.) तालाब के निर्माण के सम्बन्ध मे

(10.) रोड डैम के निर्माण के सम्बन्ध मे

(11.) एनिकट निर्माण के सम्बन्ध मे

(12) हैण्डपम्प मरम्मत और नया हैण्डपम्प लगाने के सम्बन्ध मे।

(13) खेत समतलीकरण / पशुबाडा निर्माण खेत तलावडी नए कुए के निर्माण और पुराने कुए के गहरीकरण व मरम्मत के सम्बन्ध मे

14. श्मशान घाट बनवाने के सम्बन्ध में

(15) वृक्षा रोपण के सम्बन्ध में

(16) काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावा करने के सम्बन्ध में

(17) वन पर सामुदायिक दावा करने के सम्बन्ध में

18. गाँव के आपसी विवाद का निपटारा गाँव सभा मे करने के सम्बन्ध मे

(19) सामाजिक कुरीतियो को खत्म करने के सम्बन्ध में
डायन प्रथा
मौताना
बाल विवाह
बाल श्रम

[18] सामाजिक कुरीतियो को खत्म करने के सम्बन्ध मे,
(1) बाल श्रम पर रोक
(2) बाल विवाह पर रोक
(3) मौताणा पर रोक
(4) डायन प्रथा पर रोक

प्रस्ताव न. 18 मे प्रस्तावित सामाजिक कुरीतियो बालश्रम, बाल विवाह, मौताणा और डायन प्रथा पर पूर्ण रूप से रोक लगाने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया

गाँव सभा की कार्यवाही को संचालित करने के लिये निम्न लिखित लोगो को अधिकृत किया गया
(1) रामलाल बरण्डा
(2) गौतमलाल रोत
(3) [illegible] रोत
(4) [illegible] रोत
(5) [illegible] रोत

अन्त मे गाँव सभा मे उपस्थित लोगो को धन्यवाद देकर सभा का समापन किया

बैठक अध्यक्ष
[illegible]

[illegible]

विलेज प्लानिंग फेसिलिटेटर टीम (वीपीएफटी)

1. रामलाल बरंडा 9610695013
2. मणिलाल रोत